PARMAR PRBHA.A Sem :- २

अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स

२०२५-

२० सितम्बर २००७ को अहमदा
अड्डे पर अमरीका से एक हवाई जहाज आ पहुंचा
अंतरिक्ष यान पृथ्वी पर पहुंचने जैसी उत्तेजना हुई

गुजरात का गौरव भारत का
और पूरे विश्व की बेटी सुनीता
महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे
वह उच्च से उच्च पद पर आसीन
हो परम्पराओं की बेडी को तोडकर
को साकार रूप देने की क्षमता
नारी में है! युवा पीढी की गौरवशाली
में अंतरिक्ष पर अपना अस्तित्व स्थापि
भारतीय महिला कल्पना चावला के
विलियम्स का नाम जुडा है! सुनीता
भारत की प्रतिष्ठा को गौरवान्वित किया
!

सुनीता का जन्म १९ सितम्
को ओह्यो अमरीका में हुआ था। मुक्त वातावरण में पली
साहसिक वृत्तियाँ उभर सुनीता बचपन से ही दौड, स्वीमिंग घुड
स्नोबोर्डिंग, धनुर्विद्या जैसे साहसभरे खेलों में भाग लेती
मेहनती थी!

सुनीता ने खास मित्र म
माइकल विलियम्स से शादी की और सुनीता पंड्या से सुनीता
बनी माईकल विलियम्स ने सुनीता को सिद्धि में साथ दिया!
सर्वोच्च स्थान पर बिठाना है! तो सुनीता की तरह बनना होगा!

Aadiwasi Arts &
Commerse College

हिन्दी

नाम: जरभोड अंकिताजैन जे
F. Y. B. A. Sem 2
रोल नं.: 580
२०२५-२०

धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व

धर्मवीर भारती का जन्म: 25 दिसंबर 1926 को आतरसुइया, इलाहाबाद में हुआ था।

पिता का नाम: श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी।

शिक्षा: डी. ए. वी. हाई स्कूल में हुई और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम ए करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में। सिद्ध साहित्य पर शोध-प्रबंध लिखकर उन्होंने पीएच.डी प्राप्त की।

धर्मवीर भारती का दाम्पत्य जीवन

- ★ धर्मवीर भारती प्रेम की कोमल अनुभूति से सबक ली हुए किन्तु उसमें वे अनेक कारणों से सफल न हो सके।
- ★ धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे।
- ★ डॉ. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

कार्य-क्षेत्र प्रमुख कृतियां

- ★ 1948 में संगम सम्पादक श्री इलाचंद जोशी में सहकारी संपादक नियुक्त हुए। दो वर्ष वहाँ काम करने के बाद हिन्दुस्तानी अकादमी में अध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 तक कार्य किया। प्रयाग कार्य किया।
- ★ 1987 में डॉ. भारती ने अवकाश ग्रहण किया। 1999 में युवा कहानीकार उदय प्रकाश के निर्देशन में साहित्य अकादमी दिल्ली के लिए डॉ. भारती पर एक वृत्त चित्र का निर्माण भी हुआ है।

अलंकरण तथा पुरस्कार

1972 में पद्मश्री से अलंकृत डॉ. धर्मवीर भारती को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें से प्रमुख है।

- ★ 1984 हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार
- ★ महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन 1988
- ★ सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार संगीत नाटक अकादमी दिल्ली 1989
- ★ भारत भारती पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 1990
- ★ महाराष्ट्र गौरव, महाराष्ट्र सरकार 1994

प्रमुख कृतियाँ:

कहानी संग्रह: मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से, समस्त कहानियाँ एक साथ

काव्य-रचनाएँ: ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी, आद्यन्त

उपन्यास: गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन

निबन्ध: ठेले पर हिमालय, पश्यंती

कहानियाँ: अनकही, नदी प्यासी थी, नील झील, मानव मूल्य और साहित्य, ठण्डा लोहा,

आलोचना: प्रगतिवाद: एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य।

नाम :- नीनामा कल्पेशकुमार रमेशभाई

बी.ए. कॉलेज सेम :- २ रोल नंबर :- ६२२

२०२३-२०

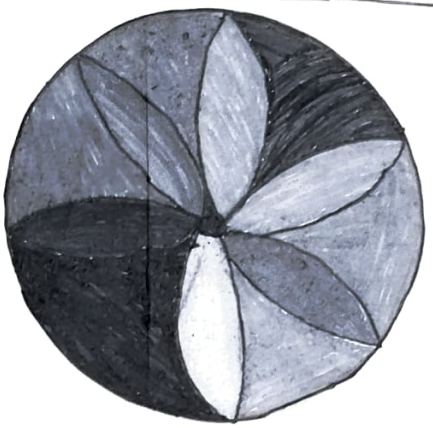

सब धरती कागज करूँ,
लिखनी सब बनराय।

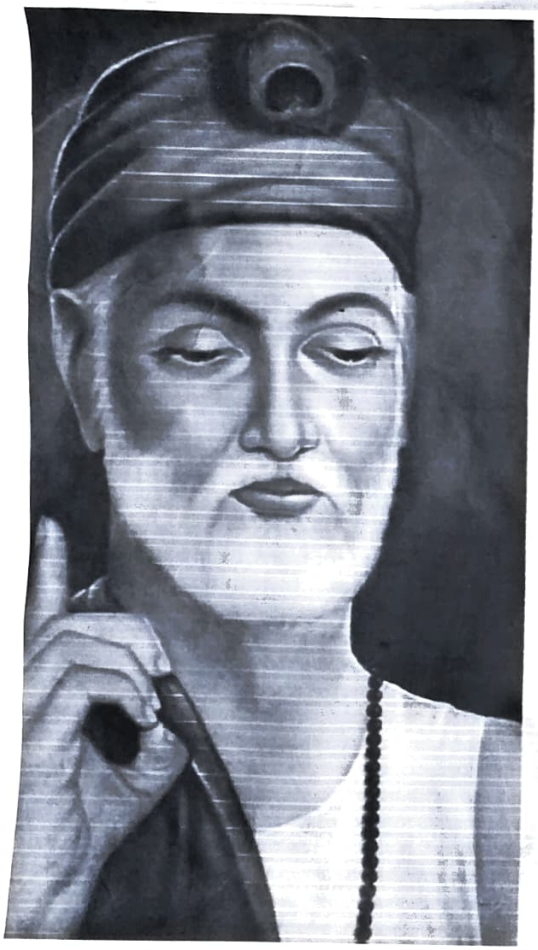

सात समुद्र की मसि करूँ,
गुरु गुण लिखा न जाय॥

कबीर :

रोल नम्बर :- 272 २०२५-२०

सुदामा पाण्डेय

जन्म : 9 नवम्बर 1936

निधन : 10 फरवरी 1975

पिता का नाम : शिवनायक

माता का नाम : रसवंती देवी

धूमिल का जीवन परिचय

जन्म : 09 नवम्बर 1936
निधन : 10 फरवरी 1975

धूमिल का मूल नाम सुदामा पाण्डेय है। उनका जन्म 9 नवम्बर 1936 को वाराणसी के निकट गाँव खेवली में हुआ था। उनके पिता शिवनायक पांडे एक मुनीम थे। उनकी इच्छा काशी की खेवली में बने थे। धूमिल ग्यारह वर्ष के थे, इनके पिता का देहांत हो गया। इनकी माता रसवंती देवी घरबार संभालती थीं। जब धूमिल का बचपन संघर्षमय रहा।

हाईस्कूल [illegible] धूमिल का विवाह 22 वर्ष की आयु में [illegible] 1953 में [illegible] रहते थे अपनी पढ़ाई आगे न कर सके। [illegible] अवसाद [illegible] ने मिला तो और [illegible] पर [illegible] कि आदेशों को [illegible]

पांडे जी मिले तो उन्होंने अपनी जानकारी में उन्हें एक लड़की की कम्पनी (मैसर्स तलवार ब्रदर्स प्रा. लि.) में नौकरी दिलवा दी। वहाँ वे लगभग डेढ़ वर्ष तक एक अधिकारी के तौर पर कार्यरत रहे। इस बीच अवश्य होने पर स्वास्थ्य, साथ हेतु घर और आए। बीमारी के दौरान मालिक ने उन्हें नौकरी से मंजूरी पहले जाने की बात कहा। "धूमिल" ने अपने अवस्थ होने का हवाला देकर इनकार कर दिया। मालिक पर घमंड वहीम उड़ा, "आई एम पेइंग फॉर माई वर्क", "नॉट फॉर योर हेल्थ।" मित्र क्या था? आठ बार की की नौकरी, पूर्ति घनचूहर मिलनेवाला, अपमान वही ए.डी.ए. धूमिल ने सबको लात लगा दी। इसी पहना से धूमिल इजारेदारियों और मजबूरों के दृष्टिकोण से आसजे को समझे। अब उनका जनवादी संघर्ष उनकी कविता में आक्रोश बन प्रकट होनेवाला था।

1975 में "धूमिल" ने काशी विश्वविद्यालय के औद्योगिक संस्थान में प्रवेश लिया। 1985 में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर विद्युत का डिप्लोमा लिया। वहीं विद्युत-अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। फिर वही नौकरी व पदोन्नति पाकर वे बलिया, बनारस व सहारनपुर में कारण उन्हें 1SCV में जब वे सितापुर के कार्यरत थे तो वे अवस्थ हो गये। अपनी स्पष्टवादिता व अक्खड़पन की जिस ढंग से उल्लासित करते रहते थे। वही दबाव "धूमिल" की मानसिक तनाव का कारण बन गया। अक्टूबर 1968 में उन्हें असहनीय सिर दर्द के कारण "धूमिल" को काशी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन ट्यूमर बताया। नवम्बर 1964 को उन्हें "लखनऊ" के मेडिकल कॉलेज में ले गए गया। उनके मस्तिष्क का ऑपरेशन हुआ लेकिन उसके बाद वे कोमा में गए और बेहोशी की इसी अवस्था में हो 10 फरवरी 1964 को वे काल के ग्रास बन गए।

- धूमिल की साहित्यिक कृतियाँ :-
- संसद से सड़क तक
- कल सुनना मुझे (संपादक)
- धूमिल की कविताएँ (संपादक - डॉ. शुकदेव)
- सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र (संपादक - रत्नशंकर)

धूमिल को मरणोपरांत 1961 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।